हिंदी डी सी -1

सेमेस्टर-I

प्रश्न पत्र- IV, हिंदी उपन्यास

इकाई-1

अध्याय: गोदान : औपन्यासिक शिल्प

अध्याय लेखक: नीरज

कॉलेज / विभाग : भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

Scanned with CamScanner

विषय-प्रवेश :

विश्व मानवता, भारतीय-राष्ट्रीय एवं जनवादी चेतना-संपन्न कालजयी रचनाकार प्रेमचंद हिंदी के ऐसे पहले हस्ताक्षर हैं जिन्होंने जीवन को समग्रता में ग्रहण करते हुए व्यक्तिवादी साहित्य का विरोध कर ऐसे साहित्य के निर्माण का समर्थन किया जो व्यक्ति एवं समाज दोनों के विकास के लिए प्रेरणादायक हो. ऐतिहासिक-विकास की दृष्टि से देखे तो प्रेमचंद से पहले हिंदी कथा-साहित्य का ढांचा लगभग मध्ययुगीन आख्यान जैसा ही था. उन्होंने न केवल भारत के गाँवों, कस्बों और नगरों के विविध पहलुओं का मर्मस्पर्शी एवं यथार्थपरक चित्रण किया है अपितु कथा-साहित्य की पूरी रचना-प्रक्रिया को ही बदल दिया. अपनी लेखकीय संवेदना में हमेशा प्रेमचंद साधारण जनता के साथ खड़े दिखाई देतें हैं परन्तु उन्होंने सर्वाधिक शोषित किसान, अछूत और स्त्री को एक तरह से केंद्र में लाकर खड़ा कर दिया. भारतीय किसान, जमीनदारों, सूदखोरों-महाजनों, पुरोहित-वर्ग और सरकारी अधिकारियों द्वारा समाज के खासकर किसानों के नग्न और अमानुषिक-शोषण को प्रभावशाली ढंग से चित्रित करने में उन्हें जो असाधारण सफलता मिली है, वैसा शायद ही किसी अन्य भारतीय लेखक को प्राप्त हुआ है. यही कारण है कि "संस्कार ग्रस्त मनुष्यता का अपनी मुक्ति के लिए संघर्ष और इस संघर्ष में अपनी युगांतरकारी चेतना के साथ प्रेमचंद यातनाग्रस्त मनुष्यता के पक्षधर" बनकर सामने आते हैं. उनके पात्र जीवन के इतना निकट होते हैं कि उन्हें समाज के हर वर्ग में देखा जा सकता है. प्रेमचंद की मृत्यु के लगभग 75 वर्ष से भी अधिक बीत जाने के बाद आज भी उनकी कथावस्तु का ताना-बाना हम समाज में जैसा-का-तैसा पाते हैं. स्वतंत्र भारत में परिस्थितियॉ बदल गई, सरकारी उत्पीड़न का दौर नहीं रहा, जमीनदार और साहूकार का दौर भी ख़त्म हो गया मगर नए चेहरों के साथ शोषण, उत्पीड़न करने वाले लोग आज भी समाज में विद्यमान हैं. मनुष्य जीवन की इन्हीं परिस्थितियों एवं समाज की पीड़ा और छटपटाहट को प्रस्तावित करने के कारण रामविलास शर्मा ने उन्हें 'जीवन सत्य का अनुसरण' करने वाला कलाकार मानते हुए उनके रचना-संसार को हमारे 'जातीय जीवन का दर्पण' माना है. 'प्रेमचंद और उनका युग' में वे लिखते है- "विराट मानव-संस्कृति की धारा में भारतीय जन संस्कृति की गंगा ने जो कुछ दिया इसके प्रमाण प्रेमचंद के लगभग एक दर्जन उपन्यास और उनकी सैकड़ों कहानियॉ हैं. करोड़ों मनुष्य का संहार करने वाले दो महायुद्धों के बीच प्रेमचंद की वाणी अपने भविष्य में अटल विश्वास

Scanned with CamScanner